प्रकाशनार्थ।

20 मई, 2023 गोरखपुर ।

श्री गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर में मूर्ति - प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ के छठे दिवस के अवसर पर कथा व्यास डॉ॰ श्यामसुन्दर पाराशर जी ने कहा कि

गिरिराज गोवर्धन की पूजा भगवान के कहने पर सब ब्रजवासी करते हैं, इससे इंद्रदेव नाराज होकर अतिवृष्टि करने लगे, तब गोकुलवासियों के निवेदन पर भगवान अपनी एक हाथ की कनिष्ठिका अंगुली से गोवर्धन उठा लेते हैं, और सबकी प्राण रक्षा करते हैं। पर्वत उठाकर धारण करने से भगवान का नाम गिरधारी पड़ा।

भगवान अपनी भगवत्ता प्रगट भी करते हैं, और छुपाकर लीला भी करते हैं। उन्होंने ब्रज वासियों से कहा कि मैं भगवान नहीं हूं अपितु एक मंत्र के द्वारा तुम सभी की शक्ति को चुराकर पर्वत उठा लिया। इंद्रदेव भगवान् की यह लीला देखकर समझ गये और भगवान के चरणों में प्रणाम कर क्षमा मांगते हैं, और भगवान को गोविंद नाम से स्तुति करते हैं।

उन्होंने कहा कि भगवान ब्रज वासियों के कहने पर उन्हें ब्रह्मा कुण्ड में बैकुंठ का दर्शन कराया, वापस ब्रज में आने पर ग्वालों ने कहा कि हमें बैकुंठ से अच्छा अपना ब्रज हीं लगता है। बैकुंठ में सब सुख होने पर भी तुम हम लोगों को दुर्लभ थे, किन्तु यहां हम तुम्हारे साथ हमेशा रहते हैं, इसलिए हमें यह ब्रज बैकुंठ से भी प्यारा है।

उन्होंने कहा कि वृंदावन भगवान का निज धाम है धाम अर्थात घर। बैकुंठ में भगवान अखिल ब्रह्मांड के अधिनायक बनकर बैठे रहते हैं, बैकुंठ उनका ऑफिस है और ऑफिस में अधिकारी उतने सुलभ नहीं होते, जितने अपने घर वाले लोगों के साथ सर्व सुलभ रहते हैं।

उन्होंने रास पंचाध्यायी का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान् शरद पूर्णिमा के दिन योग माया के नाम से आह्लादिनी शक्ति राधारानी का स्मरण किया और ऐसी

प्यारी वंशी बजाई की जो गोपियां जैसी स्थिति में थी, उसी तरह भगवान की तरफ चल पड़ी। भगवान ने अपनी माया के द्वारा सबके साथ रास रचाया। इस महारास में गोपियों को अपने शरीर का भान ही नहीं रहा है। जो जैसी थी वैसी ही भगवान् के पास पहुंच गयी। भगवान् उनका स्वागत करते हुए उनसे आने का कारण पूछते हैं तो गोपियों ने प्रणय गीत के माध्यम से अपने हृदय की बात भगवान से कहीं।

कथा व्यास ने बताया कि गोपियां सामान्य स्त्रियां नहीं है गोपी का अर्थ बताते हुए कहे कि गो माने इंद्रियों के द्वारा जो कृष्ण रस का पान करने वाली गोपियां प्रभु के अनेकों पूर्व जन्म के साधक हैं जो अपने साधना के फलस्वरुप आज गोपियां बनकर आये हैं। उन्होंने बताया कि रामावतार में दण्डकारण्य के तपस्या करने वाले महर्षि जब भगवान का सुन्दर रूप का दर्शन करते है तो अपने को स्त्री रूप में भगवान् से कामना करते हैं, तभी भगवान ने उन्हें वरदान दिया था कि कृष्णावतार में आप सभी गोपियां बनकर पैदा होंगे तब मैं आप सभी के साथ महा रास करूंगा। वह सभी साधक आज गोपियां बनीं है, भगवान् अपना वरदान पूरा करने के लिए वंशी बजाते हैं, भगवान गोपियों की परीक्षा लेते हैं, सभी गोपियां उत्तीर्ण होती हैं, तब भगवान् उनके साथ रास करते हैं। तभी कामदेव आकर अपने पांचों वाणों को उनके ऊपर छोड़ता है, लेकिन भगवान् के ऊपर कामदेव का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तब वह भगवान् के चरणों में गिरता है, और भगवान का अच्युत नाम धरकर उनकी स्तुति करता है और उनको अपना पिता मानता है। बाद में वहीं कामदेव प्रद्युम्न के रूप में भगवान् का पुत्र बनकर पैदा होता है।

प्रेम का वर्णन करते हुए कथा व्यास कहते हैं कि जो प्रियतम के सुख से सुखी होता हो, उसी का प्रेम सच्चा प्रेम है। गोपियाँ कृष्ण के अंतर्धान होने पर भी उनके विरह से व्याकुल होकर उनको गोपीगीत के द्वारा बुलाती है। गोपीगीत गोपियों के प्रेम का प्रस्फुटन है, जिसे गाकर भक्तजन आज भी भगवान के प्रेम को प्राप्त करते हैं।

उन्होने कह कि भगवान् का कथामृत श्रवण करने से मन के सभी मल धुल जाता है और जीवन मंगलमय हो जाता है। हरि अनन्त है, और उनकी कथा भी अनन्त है,

भक्त चाहे जितना सुने, कथा न समाप्त होगी ना ही सुनने से तृप्ति होगी। गोपियों की प्यारे विरह गीत से भगवान को उनके बीच में आना पड़ा।

उन्होंने कहा की रासलीला काम लीला नहीं है, अपितु काम पर विजय की लीला है, इसको जो काम की दृष्टि से देखता है, वह अत्यंत अज्ञानी व जड़ होता है। इस लीला में काम को भस्म करने वाले भगवान शिव भी स्वयं गोपीश्वरनाथ बनकर नृत्य करते हैं, तो काम का प्रभाव वहां भला कहां होगा। इसलिए रास पंचाध्यायी का पाठ करने से काम शांत होता है, उद्दीप्त नहीं होता।

कथा में भगवान् का अक्रूर के साथ मथुरा आगमन, वहाँ कुबडी का उद्धार, चाणुर वध, मुष्टिकासुर, कूटासुर तथा कंस के वध का वध वर्णन करते किया गया।

कथा में अयोध्या धाम से पधारे महन्त राजकुमार दास जी ने कहा कि राम और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं है। गोरक्षपीठ एक सिद्ध पीठ है, ऐसे स्थल पर श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करना सौभाग्य की बात है।

सुग्रीव किला अयोध्या धाम से पधारे जगद्गुरु विश्वेश प्रपन्नाचार्य ने कहा कि कथाव्यास डॉ॰ पाराशर जी शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ होने के साथ अत्यन्त सरल व विद्वान् वक्ता है। उन्होंने कहा कि जिस राज्य की संकल्पना कथा के द्वारा कथा व्यास ने की वह इस समय उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री जी के द्वारा रामराज्य स्तापित हुआ है।

कथा का समापन आरती और प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ॰ श्रीभगवान सिंह ने किया।

कथा में योगी कमलनाथ, सांसद अलवर योगी बालकनाथ जी, कटक से योगी शिवनाथ, महन्त रवीन्द्र दास, वाराणसी से महन्त सन्तोषदास सतुआबाबा, आदि संत , यजमानगण तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।